CC- 7 : History of Bihar

मध्यकालीन बिहार में शिक्षा और शिक्षण संस्थाएं

Educational Centres of Early Medieval Bihar

बॉयड एच्. बोड का कथन है μ ''समाज और शिक्षा का एक-दूसरे से पारस्परिक कारण और परिणाम का सम्बन्ध है ।किसी भी समाज का स्वरूप उसकी शिक्षा-व्यवस्था के स्वरूप को निर्धारित करता है और इस व्यवस्था का स्वरूप समाज के स्वरूप को निर्धारित करता है ।' इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि μ ''शिक्षा' और 'समाज' μ दोनों अविच्छिन्न रूप से परस्पर गुँथे हुए हैं । एक की प्रगति पर दूसरे की प्रगति निर्भर है, एवं एक की अवनति बहुत अंशों तक दूसरे के ह्रास का कारण भी बन जाती है ।किसी भी समाज में प्रचलित शिक्षा के दृष्टिकोण एवं विधियों का उस समाज की अन्य सामाजिक संस्थाओं पर अति महत्त्वपूर्ण तथा व्यापक प्रभाव पड़ता है ।किसी भी समाज में प्रचलित शिक्षा की प्रणाली उस समाज को प्रभावित करती है एवं उस समाज में प्रचलित से प्रभवित भी होती है ।

मुस्लिमों के आगमन के बाद भारत में पुरानी शिक्षा प्रणाली के साथ-साथ एक नवीन शिक्षा प्रणाली प्रस्फुटित हुई, जिसे 'मुस्लिम शिक्षा' की संज्ञा दी जाती है । भारत में लगभग साढ़े पाँच सौ वर्ष मुसलमानों का शासन रहा । इस काल में मुस्लिम शिक्षा के उद्देश्यों में महत्त्वपूर्ण था μ ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करना, इस्लाम धर्म का प्रचार, एक विशिष्ट नैतिकता का प्रचार-प्रसार, मुस्लिम सिद्धान्तों, कानूनों तथा सामाजिक प्रथाओं का प्रचार, सांसरिक ऐश्वर्य की प्राप्ति, मुस्लिम शासन को सुदृढ़ बनाना, तथा मुसलमानों को धर्म-परायण बनाना ।

मुहम्मद साहब के अनुसार दान में सोना देने की अपेक्षा बच्चे को शिक्षा देना श्रेष्ठ है । मुहम्मद गोरी ने पाठशालाओं को तुड़वा कर मकतबों और मदरसों का निर्माण करवाया । कुतुबुद्दीन ऐबक ने मस्जिदें बनवाकर मुस्लिम शिक्षा को प्रोत्साहन दिया । इल्तुतमिश ने दिल्ली में '' मदरसा-ए- मुअज्जी' और बलबन ने '' नासरिया'' की स्थापना की । अलाउद्दीन ने '' हौज-ए-खास'' से सम्बद्ध एक मदरसा बनवाया। मुहम्मद तुगलक ने दिल्ली में एक मदरसा निर्मित करवाया । फिरोज तुगलक द्वारा स्थपित किया गया ''मदरसा-ए-फिरोजशाही'' एक सावास विश्वविद्यालय था । सिकन्दर लोदी ने अपने राज्य के सब भागों में मदरसों की स्थापना की। बाबर ने भी मकतबों और मदरसों के निर्माण की व्यवस्था की । हुमायूँ द्वारा दिल्ली में बनवाये गये मदरसे में गणित, भूगोल व नक्षत्र-विद्या के शिक्षण का प्रबन्ध था । वहीं अकबर ने आगरा, फतेहपुर सीकरी, गुजरात आदि में सावास मदरसे बनवाये । जहाँगीर ने पुराने मदरसों की मरम्मत करवाकर शिक्षकों को नियुक्त किया । शाहजहाँ ने दिल्ली की जामा-मस्जिद के पास एक मदरसा स्थपित किया तो औरंगजेब ने भी अनेक मकतबों और मदरसों की स्थापना की।

प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था मकतबों में थी । मकतब-प्रवेश के समय 'बिस्मिल्लाह' रस्म सम्पादित की जाती थी । पाठ्यक्रम के अन्तर्गत लिखना, पढ़ना तथा प्रारंभिक गणित का ज्ञान कराया जाता था । नैतिक शिक्षा पर बल दिया जाता था । शिक्षण-विधि मौखिक थी । एडम ने अपने सर्वेक्षण प्रतिवेदन में फारसी एवं अरबी स्कूलों का भी जिक्र किया है । दक्षिणी बिहार (गयाद्ध में उन्हें **279** मकतब मिले । मकतब भी एक शिक्षकीय विद्यालय हुआ करते थे । उनमें एक छोड़कर सभी शिक्षक मुसलमान थे । दो ऐसे शिक्षक थे जो बिना शुल्क के छात्रों को पढ़ाते थे, दो ऐसे भी थे जो छात्रों को भोजन उपलब्ध् कराते थे । परन्तु अधिकांश मकतब के शिक्षक अभिभावकों द्वारा दिए गए शुल्क पर निर्भर करते थे । उनकी मासिक आय लगभग चार रुपए की थी । शिक्षकों की आय का एक अन्य स्रोत भी था जिसे 'शुरुआती' कहा जाता था । यह रशि छात्रों से विद्यालय में प्रवेश के वक्त ली जाती थी। परन्तु यह रशि अत्यन्त छोटी होती थी । मकतब की खासियत थी कि इनमें हिन्दू छात्र भी पढ़ते थे । कुल **1486** छात्रों में **867** छात्र हिन्दू थे । दो हिन्दू छात्रों को अरबी भाषा का अध्ययन करते पाया गया ।

मुस्लिम कालीन शिक्षा के आधारभूत तत्त्व तथा विशेषताएँ अग्रलिखित थीं μ शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जाता था परन्तु यह व्यापक एवं सर्वसुलभ नहीं थी । प्रान्तीय भाषाओं की उपेक्षा हुई। साथ ही शिक्षा में मौलिक दृष्टिकोण का अभाव था । गुरु-शिष्य सम्बन्ध मौजूद थे, अनुशासन तथा दण्ड-विधान कठोर था । मदरसों के लिए कोई निर्धरित पाठ्यक्रम नहीं था । चार-पांच वर्ष की आयु में उनकी खल्लीधराई होती । उस वक्त बच्चों से कुरान की आयतें दुहराने की रस्म थी । अलिफ सीखने के बाद बच्चों को खलकबारी (शब्दकोश) रटाया जाता । पाठ्यक्रम में शेख शादी का पंदनामा, आमदनामा, गुलिस्तां-बोस्तां, जमे-उल-ख्वानिन, रुक्कत मनुल्ला हुसैनी, बहार दानिश, अबुल फजल और सिकन्दरनामा शामिल थे । पाठ्यक्रम का बोझ इतना था कि बहुत कम ही छात्र इसे पूरा कर पाते । अधिकांश जोड़-घटाव, गुणा-भाग, दस्तखत करने से आगे नहीं बढ़ पाते थे ।

मदरसा सुबह से लेकर ग्यारह बजे तक लगता और पुनःशाम को चार बजे से । यहां कोई वर्ग व्यवस्था नहीं थी इसलिए प्रत्येक छात्र बारी-बारी से कुछ समय के लिए मुदर्रिस के निकट पाठ सीखने बैठते फिर वापस अपने स्थान पर आकर बैठ जाते । उच्च शिक्षा की व्यवस्था मदरसों में थी । पाठ्यक्रम दो भागों में विभाजित था μ लौकिक शिक्षा तथा धर्मिक शिक्षा । अध्यापन के लिए शिक्षक भाषण-प्रणाली का प्रयोग करते थे । स्वाध्याय की आदत को प्रोत्साहित किया जाता था। बालचर-प्रणाली का प्रचलन था। विद्याध्ययन समाप्त करने पर छात्रों को उपाधियाँ दी जाती थी।

मकतब में पढ़ाई जाने वाली पुस्तकें – ममकीमा, निसावुस सुब्हां, सवाल-जवाब, इंसा-ए-माधेराम, इंसा-ए-मुसल्लस, मुख्तसर-उल-इबारत, ईसां-ए-खुद, मुफीद-उल-इंसा, इंसा-ए- ब्राह्मण, मुराद-ए-हासिल, अलकाब नामा, हिलाली और कलीम की शायरी, नामा-ए-हक, गौहार-ए-मुराद, किरानास सादिन, मीजान- उल-तिब तीबा-ए-अकब ।

तिरहुत में **234** मकतबों थे । इन मकतबों के सभी शिक्षक मुसलमान थे जो फारसी पढ़ाते थे । कुछ मकतबों में अरबी शिक्षक भी पाए गए जिनकी संख्या मात्र आठ थी। इन मकतबों में शिक्षकों की मासिक आय मात्र तीन रुपए थी। फारसी स्कूलों में कुल **569** छात्र थे जिनमें **443** छात्र हिन्दू ही थे ।

फारसी स्कूलों में अरबी पढ़ने की व्यवस्था थी। यह छात्रों पर निर्भर करता था कि वे क्या पढ़ना चाहते थे । अरबी के शिक्षक बहुधा फारसी के भी ज्ञाता होते थे । अरबी की पढ़ाई में व्याकरण पर जोर अधिक था। उन्हें बारीकी से इस्लामी धर्म ग्रंथों का अध्ययन करना होता था। इसके साथ यूक्लिड की रेखागणित का अध्ययन भी करते थे । अरबी छात्रों के लिए मंगलवार और शुक्रवार छुट्टी का दिन होता। रमजान के पूरे महीने में मदरसा में छुट्टी रहती थी। मुहर्रम के दस दिन और अन्य त्यौहारों के पर्व में पांच दिन छुट्टी रहती थी।

विद्यालयों के प्रबंधन का अध्ययन करते हुए एडम ने यह निष्कर्ष निकाला कि हिन्दी और संस्कृत पाठशालाओं के बीच किसी प्रकार के संबंध नहीं थे । पाठशालाओं में पढ़ने वाले छात्र आगामी अध्ययन के लिए संस्कृत स्कूलों में प्रवेश नहीं ले सकते थे । परन्तु फारसी और अरबी विद्यालयों के साथ ऐसी बात नहीं थी । फारसी से बिस्मिल्ला करने वाले छात्रों के लिए अरबी का रास्ता खुला था। एक ही विद्यालय में अरबी और फारसी दोनों की पढ़ाई होती थी । यहां तक कि अरबी के शिक्षक उसी विद्यालय में एक ही छात्र को फारसी और अरबी दोनों पढ़ाते थे ।

मध्यकाल में संस्कृत शिक्षा संकट के दौर से गुजर रही थी परन्तु पूर्णतः ओझल नहीं हुई थी। बिहार के कोने-कोने में संस्कृत स्कूल फैले हुए थे जहां विद्वान अपने शिष्यों को पढ़ाया करते थे ।मिथिला कभी संस्कृत शिक्षा का महत्वपूर्ण केन्द्र था । संस्कृत विद्यालय को चतुष्पदी के नाम से संबोधित किया जाता था क्योंकि यहां व्याकरण, न्याय, पुराण और दर्शन चारों शास्त्रों की शिक्षा दी जाती थी । कालान्तर में इसे 'टोल' के नाम से भी पुकारा जाने लगा ।शिक्षक के घर पर ही कक्षाएं लगा करती थी शिष्यों की संख्या शिक्षकों की ख्याति पर निर्भर करती थी। ख्याति प्राप्त शिक्षकों के पास अपेक्षाकृत अधिक शिष्य हुआ करते थे ।जिन शिक्षकों के पास किसी प्रकार की ख्याति नहीं होती थी उन्हें शिष्य जुटाने में कठिनाई होती थी । इस परिस्थिति में वे अपने सगे-संबंधियों को ही अपने विद्यालय में दाखिल कर लिया करते थे । अगर किसी शास्त्रार्थ में वे विजयी होते तो उन्हें शिष्य जुटाने में कोई दिक्कत नहीं होती थी ।उन दिनों कोई स्कूल भवन नहीं होता था छात्रों को रहने के लिए कोई छात्रावास भी नहीं था । छात्र अपने गुरु के घर पर ही रहते तथा विद्याध्ययन करते थे । गुरु अपने शिष्यों को आश्रय देने में गर्व महसूस करते थे । हालांकि इस वजह से गुरु कर्ज के बोझ से दब जाते परन्तु छात्रों को इस बात का अहसास नहीं होता था । किसी व्यक्ति अथवा संस्था के दान से ही वे इस कर्ज से उबर पाते । कभी राजे-महाराजे उन्हें मदद कर दिया करते, परन्तु अधिकांश मामले में छात्रों को उन गांवों के संभ्रांत लोगों के द्वारा वजीफे पर निर्भर रहना पड़ता था, जिस गांव में वह स्कूल स्थित होता था

कक्षाएं सुबह और अपराह्न में लगती थीं । बीच में तीन घंटे का अवकाश मिलता था जिसमें छात्र स्नान-ध्यान पूजा-पाठ, भोजन आदि दैनिक क्रिया-कर्मों से निपट पाते थे । अपराह्न की कक्षा सूर्यास्त तक चलती थी । दो घंटे विश्राम के बाद वे अपना पाठ पूरा में लग जाते थे । जो छात्र अपना पाठ पूरा नहीं कर पाते थे, गुरु रात में भी उनकी कक्षाएं लेते थे जिन चतुष्पदियों में छात्रों की संख्या अधिक होती वहां अध्यापक सिर्फ ऊंची कक्षाओं में अध्यापन कार्य करते थे । ऊंची कक्षाओं के छात्र नीचे की कक्षा के छात्रों को पढ़ाते थे । इस तरह छात्र नीची कक्षाओं के पाठों की पुनरावृत्ति भी कर लेते थे तथा शिक्षण कला में दक्षता भी प्राप्त कर लेते थे । उनकी प्रगति के आधार पर छात्रों का वर्गीकरण किया जाता । अच्छे छात्र ऊंची आवाज में पाठ का वाचन करते थे शिक्षक बीच-बीच में मुश्किल पाठों का भाष्य करते जाते थे ।

चतुष्पदी में व्याकरण, न्याय, अध्यात्म और ज्योतिष अध्ययन के मुख्य विषय थे । इन सबों में अध्यात्म को श्रेष्ठ समझा जाता था । पठन-पाठन में पुस्तकों का प्रयोग कम होता था । किसी एक पंडित के पास मात्र **10** से **15** किताबें होती थी । उन दिनों ग्रंथों को बहुत बड़ी सम्पत्ति समझा जाता था । जिस पंडित के पास जो ग्रंथ होते थे उसके ज्ञान पर उसी पंडित का प्राधिकार समझा जाता था । यही कारण था कि ज्ञान की किसी खास शाखा पर किसी एक या दो परिवार का वर्चस्व था । पठन-पाठन में चूंकि वाच्य माध्यम का प्रयोग अधिक होता था इसलिए बहुत सारे पंडित लिखने की कला से बिल्कुल अनभिज्ञ थे । अर्थात् निरक्षरता और पांडित्य में किसी प्रकार का विरोधभास नहीं था ।

चतुष्पदी में तंत्र और वैदक की शिक्षा दी जाती थी । वैदक पर पूर्णतः शाकद्वीपी ब्राह्मणों का वर्चस्व था। बिहार में उन दिनों शाहाबाद में लगभग **103** चिकित्सक वैद्य थे जिसमें मात्र दो को छोड़कर सभी शाकद्वीपी ब्राह्मण थे । अध्ययन की समाप्ति के पश्चात छात्रों की परीक्षाएं ली जाती थी और उन्हें उपाधियों से विभूषित किया जाता था । उपाध्याय, महोपाध्याय तथा महामहोपाध्याय इत्यादि विभिन्न किस्म की उपाधियां थी जिन्हें पंडितों द्वारा ली गई परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के बाद छात्रों को प्रदान किया जाता था । 'उपाध्याय' की उपाधि पाने वाले छात्र अध्यापन के लिए अधिकृत होते थे । इसी प्रकार अगली परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने पर उन्हें क्रमशः महोपाध्याय तथा महामहोपाध्याय की उपाधि दी जाती थी। पाठशालाओं में अधिकांश शिक्षक कायस्थ हुआ करते थे । इनकी कोई निश्चित परीक्षा प्रणाली नहीं थी । परीक्षा लेने का काम शिक्षक नहीं बल्कि अभिभावक करते थे । सभी

लड़के किसी सार्वजनिक स्थान पर जमा होते थे । गांव के बड़े-बुजुर्ग छात्रों से गणित का प्रश्न पूछा करते । छात्रों को सारा हिसाब-किताब अपने दिमाग में ही करना होता था । इसके लिए लेखन-सामग्री की व्यवस्था नहीं थी

प्राक् ब्रिटिशकालीन भारत में संस्कृत शिक्षा प्रणाली की तुलना में मदरसा प्रणाली लोगों के बीच अधिक लोकप्रिय थी । मि. एडम ने अपनी रिपोर्ट में पूरे बिहार में सिपर्फ **83** संस्कृत आधारित स्कूलों का जिक्र किया है जबकि पफारसी आधरित स्कूलों की संख्या **523** थी । संस्कृत स्कूलों की तुलना में मदरसों में छात्रों की संख्या भी अध्कि थी । इन मिश्रित विरोधभासों के बावजूद दोनों प्रणालियों में एक समानता थी कि दोनों प्रणालियों को राजे-महाराजे एवं जमींदारों का संरक्षण प्राप्त था । इसके अलावा ये स्कूल अभिभावकों एवं छात्रों द्वारा दिए गए मदद पर आश्रित थे । बाद के दिनों में दोनों प्रणालियों को अंग्रेजों का कोपभाजन बनना पड़ा । मस्जिद के प्रभाव में मदरसा प्रणाली कुछ हद तक जिंदा रही जबकि संस्कृत शिक्षा प्रणाली पूरी तरह ध्वस्त हो गई । मदरसे के जिन्दा रहने का एक ओर कारण रहा कि मदरसों का द्वार सभी जाति एवं वर्ग के बच्चों के लिए खुला रहा जबकि संस्कृत शिक्षा अपने रूढ़िवादी स्वरूप से चिपकी रही ।

जहांगीर के शासनकाल में भागलपुर में मौलाना शाहबाज के नेतृत्व में राज्य का पहला मदरसा खुला । मौलाना शाहबाज लोगों के बीच अपनी ध्र्मपरायणता तथा विद्वता के लिए काफी लोकप्रिय थे । उन्होंने अपने प्रयास से **200** तलबों को इकट्ठा किया । आम लोगों से उगाहे गए चंदा एवं धनी लोगों द्वारा दिए गए इमदादों से इन छात्रों को मदद दी जाती थी । शाहजहां के शासनकाल में मौलाना शाहबाज का इंतकाल हो गया । इनके बाद उनके पुत्रों ने मदरसों को संचलित किया । मौलाना के पोते मुहम्मद अलीम ने इसे धर्मिक विद्वानों का जमावड़ा बना दिया । जिस वजह से यहां तलबों की संख्या घटने लगी और घटकर मात्रा **80** रह गई । बाद के दिनों में भी यह छीजन जारी रहा । मौलाना मुहम्मद अबिद के काल में यह संख्या घटकर मात्रा **30** रह गई । मुहम्मद अबिद के पुत्र मुहम्मद मुहिद के काल में मदरसे के प्रबंध में प्रधान मौलवी, सहयागी मौलवी, बावर्ची, नवीसीनदां, भिस्ती, हज्जाम, धेबी, दर्जी, माली को शामिल किया तथा इनके लिए अलग-अलग वेतन मुकर्रर किया । कमेटी ने पचास तलबों के लिए आवसीय व्यवस्था के भोजन एवं वस्त्रा का भी प्रावधान किया।

सन् **1628** के आस-पास सैफ खां ने अपने राज्यकाल में पटना में एक मदरसे की स्थापना की । अन्य मदरसों से भिन्न यह मदरसा सिर्फ एक व्यक्ति सैफ खां द्वारा संचालित था । इसे कोई अमीर उमरा के द्वारा इमदाद हासिल नहीं था । अपने समय के ख्यातिलब्ध शिक्षकों की नियुक्ति सैफ खां ने इस मदरसे में की। सभी छात्रों को आर्थिक मदद सैफ खां ही प्रदान करते थे । मदरसा के परिसर में बने मकानों एवं दुकानों का प्राप्त किराया ही मदरसे की आमदनी का जरिया था । बाद में चलकर नवाब सिराजुद्दौला के पिता नवाब जैनुलद्दीन अहमद ने मदरसे को खरीद लिया और मदरसे की जमीन पर अपनी हवेली बना ली । हालांकि एक हिस्से में मदरसा पूर्ववत् संचालित था । मदरसे की आमदनी कम होने लगी । छात्रा वहां से पलायन करने लगे । बाद में अंग्रेजों ने इसे हथियारों का गोदाम बना दिया । पटना के राजस्व प्रमुख ने रिपोर्ट दिया कि अगर छः सौ रुपए प्रतिमाह की व्यवस्था कर ली जाती तो मदरसा पूर्ववत् चल सकता था । उन दिनों बिहारशरीफ, मनेर, पटना, आरा, भागलपुर, फतुहा, सासाराम इस्लामी शिक्षा के केन्द्र थे । इसके अतिरिक्त लखीसराय के सूर्यगढ़ा कस्बे में भी एक विशाल मदरसा था जिसका जिक्र बुकानन ने अपनी यात्रा वृतांत में किया है ।